ओम् शान्ति

देही अभिमानी

आज का मनुष्य चन्द्रमा पर जा चुका है मंगल पर जाने के लिए भी तेयार है लेकिन आज मनुष्य मंगल पर जाकर भी अपना मंगल कर सकेगा या नहीं। यह एक विचारणीय प्रश्न है आज के युग में दिनन प्रति दिन नये-नये अविष्कार हो रहे है। लेकिन फिर भी मनुष्य अपने आपसे बहुत दूर होकर दु:खी अशान्त अनुभव कर रह है हर व्यक्ति टेन्शन-तनाव से ग्रस्त है यदि हमें इन सब समस्याओं का समाधान चाहिये तो एक ही मार्ग है स्वंय को जानना। यदि हम स्वयं को नहीं जानते तो दुनियां की कितनी भी जानकारी हासील कर ले हम बुद्धिमान नहीं हैं क्योंकि की स्वंय को जानने से ही मनुष्य सच्ची सुख-शान्ति की प्राप्ति कर सकने हैं।

विकार (देह अभिमान) -O+ निर्विकार,

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, पवित्रता, शान्ति, ज्ञान, सुख, प्रेम, अमिद, शक्ति आलस्य, भय

आप देखेगें कोई भी गिनती चाहे + (प्लस) हो या – (माइनस) हो बीच में 0 आता है और – से + की ओर जाने के रास्ते में 0 जरूर आत है। दु:ख का मुख्य कारण विकार है ओर विकार से मुक्त होने का उपाय अपने को विदेही अर्थात 0 समझना है आज संसार में जितने भी मनुष्य है उनके विचार विकार के वशीभूत है यदि आप सुबह से शाम तक के विचारों का संकलन करेंगे तो पायेंगे हमारे अधिकतर विचार किसी न किसी विकार से जुड़ा है कार्य करते उसके पीछे लोभ जुड़ा हुआ है। किसी विषय का विशेष ज्ञान है उसके पीछे अहंकार छिपा हुआ है जो देवतायें कर्म करते जिसके पीछे प्रेम शान्ति आनंद जैसे श्रेष्ठ गुण थे जिनके विचार गुणों से जुड़े थे जिस कारण देवतायें सदा सुखी थे और हमारे विचार जो कर्म के बीज है वहीं विकारी है तो आप सोचों जो बबुल का बीज बोकर आम खाना चाहे यह संभव नहीं है। इसलिए हमें चाहिए अपने विचारों को विकारी से मुक्त करना हैर जब तक हमारे अंदर देह का भान रहेगा हम कितना भी यत्न कर लें विकारों से दु:ख से मुक्त नहीं हो सकते है।

संसार की वा स्वयं की समस्याओं को मिटाना हो तो आत्मा स्वरूप में स्थित होना ही विधि है। आत्मा अभिमानी स्थिति का आरम्भ ही एक हजार समस्या का समाधान स्वत: कर देता है। आत्म अभिमानी स्थिति 0 स्थिति है जिसको शास्त्रों में निर्लेप कहा गया है अर्थात स्वयं को आत्मा समझने वाले व्यक्ति पर ग्रह-नक्षत्र कैसी भी सांसारिक समस्या का प्रभाव नहीं पड़ता है जिसको सच्चा ज्ञानी कह सकते है जो मान, अपमान, सुख-दु:ख लाभ-हानि में समान रहता है। जिसके कारण गीता में कहा गया है मुझे ज्ञानी तु आत्मा अति प्रिय है क्योंकि समस्या का जन्म ही स्वंय को न जानने के कारण होता है। जब हम अपने आपका ज्ञान लेगे तो अपनी समस्या स्वत: समाप्त हो जायेगी और संसार में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान करने में मदद्गार बनेगें। ऐसा व्यक्ति संसार में रहते अपने आपको सर्व बन्धनों से मुक्त अनुभव करता है। जिसको ही जीवन मुक्त अवस्था कहा गया।

शास्त्रों में मिसाल है एक बार जनक राज ने एक बड़ी सभा का आयोजन किया जिसमें देश के बड़े-बड़े विद्वान आये हुए थे। उनकी चर्चा चल रही थी उसके वीच में अष्टवक्र (जिनके आठ अंग टेढ़े थे)

सभामें आया अष्टवक्र के रूप को देखकर सभी हंसने लगे जब सभी ने हंसना बन्द किया तब अष्टवक्र जोर-जोर से हंसने लगा तब जनक राजा ने अष्टवक्र कें हंसने का कारण पूछा तब अष्टवक्र ने कहा कि राजन मैने समझा आपने विद्वान ज्ञानियों की सभा बुलाई होगी लेकिन यह तो सारे चमार है क्योंकि विद्वान तो आत्मा को देखते है लेकिन यह तो मेरे शरीर को देख रहे है। फिर उसने कहा कि राजा मैं आपको जीवन मुक्त का रास्ता बताऊँगा और उसने जनक राजा को सेकेण्ड में स्वयं का परीचय देकर जीवन मुक्त होने का रास्ता दिखाया तो हमे भी स्वयं को जानकर जीवनमुक्त अवस्था को प्राप्त करना चाहिए।

हमने देखा जीवनमुक्त अवस्था कैसे प्राप्त करे लेकिन सर्व दु:खों से मुक्त होना ही सब कुछ नहीं है जिस प्रकार किसी बन्धन में बन्धे हुए व्यक्ति को मुक्त कर दे लेकिन वह मुक्त होकर कोई कार्य ही न करें तो उससे क्या फायदा होगा स्वयं को आत्मा समझने से हम मुक्त हो जायेंगे लेकिन मुक्त होकर हमारा प्रायोजन क्या है। इसलिए हमें मुक्त होकर उन दिव्यगुणों का विकास करना चाहिए जो आत्मा के निजी गुण है जिन गुणों से स्वर्ग की स्थापना होती है दु:खी अशान्त आत्माओं को शान्ति, प्रेम, स्नेह देकर उसे भी अपने वास्तविक गुणों का अनुभव कराकर श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे सकेंगे।

आत्मा + प्रेम = आत्मिक प्रेम

देह + प्रेम = दैहिक प्रेम

आज संसार में बहुत मनुष्य है वा इतिहास में बहुत महान आत्मायें हुए जो गुणवान थे परन्तु फिर भी आज संसार नर्क है उसका मुख्य कारण है स्वयं को देह समझकर यदि हम प्रेम का अभ्यास करेंगे तो वह प्रेम एक देहधारी के प्रति विकसित होगा जैसे शाहजहाँ का प्रेम मुमताज के लिए विकसित हुआ जिसकी यादगार ताजमहल है एक देहधारी राजा विक्रमादित्य का प्रेम परमात्मा से हुआ तो उसने परमात्मा को देहधारी साकार रूप देकर सोमनाथ का मंदिर का निर्माण कराया जैसे कलर चश्मा पहनते है सब कुछ वेसा ही दिखाई देता है यदि हम स्वयंको आत्मा सझमकर प्रेम धारण करेंगे तो वह प्रेम सर्व आत्माओं के प्रति विकसित होगा जो सबके प्रति समान भावनाओं को प्रकट करेगा सबके प्रति आदर प्रकट करेगा जिसके लिए गायन है शेर और गाय एक घाट पर पानी पीते थे। वह चरित्रार्थ होता जो व्यक्ति देह सझकर शन्ति का अभ्यास करेगा उससे आसपास की आवाजे डिस्टर्व करेगी वह जंगल की तरफ ाागेगा तब उसे शान्ति महसूस होगी लेकिन जो स्वयं को आत्मा समझकर शान्ति का अभ्यास करेगा वह कितना भी आवाज हो शोरगुल हो फिर भी वह शान्त रहेगा क्योंकि उसकी शान्ति आत्मिक शान्ति है जिस शान्ति ाके भंग करने की शक्ति संसार के किसी भी आवाज वा समस्या में नहीं है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com